जगन्नाथाष्टकम्

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

जगन्नाथाष्टकम्

प्रकार	अष्टकम्
देवता	भगवान जगन्नाथ
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	श्री शंकराचार्य ग्रन्थावली, खण्ड 18 — श्री वाणी विलास प्रेस, श्रीरंगम — Vol. 18, pp. 114–116 (scan pages 126–128)
आभार	पाठ: शंकराचार्य ग्रन्थावली खण्ड 18 (वाणी विलास प्रेस), संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0); स्कैन में मिटे चिह्न दो साक्ष्यों से लौटाए गए। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसंगीतकवरो

kadācitkālindītaṭavipinasaṃgītakavaro

मुदा गोपीनारीवदनकमलास्वादमधुपः ।

mudā gopīnārīvadanakamalāsvādamadhupaḥ |

रमाशंभुब्रह्मामरपतिगणेशार्चितपदो

ramāśaṃbhubrahmāmarapatiganeśārcitapado

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ १ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 1 ||

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिञ्छ कटितटे

bhuje savye veṇuṃ śirasi śikhipiñcha kaṭitaṭe

दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विदधत् ।

dukūlaṃ netrānte sahacarakaṭākṣaṃ vidadhat |

सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो

sadā śrīmadvṛndāvanavasatilīlāparicayo

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 2 ||

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे

mahāmbhodhestīre kanakarucire nīlaśikhare

वसन्प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना ।

vasanprāsādāntaḥ sahajabalabhadreṇa balinā |

सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवावसरदो

subhadrāmadhyasthaḥ sakalasurasevāvasarado

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 3 ||

कृपापारावारः सजलजलदश्रेणिरुचिरो

kṛpāpārāvāraḥ sajalajaladaśreṇiruciro

रमावाणीसोमस्फुरदमलपद्मोद्भवमुखैः ।

ramāvāṇīsomasphuradamalapadmodbhavamukhaiḥ |

सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो

surendrairārādhyaḥ śrutigaṇaśikhāgītacarito

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 4 ||

रथारूढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटलैः

rathārūḍho gacchanpathi militabhūdevapaṭalaiḥ

स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।

stutiprādurbhāvaṃ pratipadamupākarṇya sadayaḥ |

दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया

dayāsindhurbandhuḥ sakalajagatāṃ sindhusutayā

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 5 ||

परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो

parabrahmāpīḍaḥ kuvalayadalotphullanayano

निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।

nivāsī nīlādrau nihitacaraṇo'nantaśirasi |

रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो

rasānando rādhāsarasavapurāliṅganasukho

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 6 ||

न वै प्रार्थ्यं राज्यं न च कनकता भोगविभवे

na vai prārthyaṃ rājyaṃ na ca kanakatā bhogavibhave

न याचेऽहं रम्यां निखिलजनकाम्यां वरवधूम् ।

na yāce'haṃ ramyāṃ nikhilajanakāmyāṃ varavadhūm |

सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो

sadā kāle kāle pramathapatinā gītacarito

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 7 ||

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते

hara tvaṃ saṃsāraṃ drutataramasāraṃ surapate

हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते ।

hara tvaṃ pāpānāṃ vitatimaparāṃ yādavapate |

अहो दीनानाथं निहितमचलं पातुमनिशं

aho dīnānāthaṃ nihitamacalaṃ pātumaniśaṃ

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८ ॥

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 8 ||

jagannāthaḥ svāmī nayanapathagāmī bhavatu me || 8 ||

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ जगन्नाथाष्टकं संपूर्णम् ॥

iti śrīmatparamahaṃsaparivrājakācāryasya śrīgovindabhagavatpūjyapādaśiṣyasya śrīmacchaṃkarabhagavataḥ kṛtau jagannāthāṣṭakaṃ saṃpūrṇam ||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। जो कभी यमुना-तट के वनों में संगीत रचते हैं, गोपियों के मुख-कमलों के भ्रमर हैं, जिनके चरण लक्ष्मी, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र और गणेश पूजते हैं; बाएँ हाथ में वेणु, सिर पर मोरपंख, कमर पर पीताम्बर, सखाओं पर कटाक्ष, वृन्दावन-लीला में रमे; महासागर-तट पर नीलगिरि के मन्दिर में बलभद्र के साथ, बीच में सुभद्रा, सब देवों को सेवा का अवसर देने वाले; करुणा-सागर, मेघमाला-से सुन्दर, श्रुतियों से गाए गए; रथ पर चलते, पग-पग पर ब्राह्मणों की स्तुति सुनते; नीलकमल-नयन, अनन्त पर चरण रखे; मैं राज्य, सोना, भोग या सुन्दर वधू नहीं माँगता — शिव जिनका यश गाते हैं, वे जगन्नाथ मेरी आँखों के सामने आएँ। अन्तिम श्लोक प्रार्थना करता है कि वे निस्सार संसार और पापों के ढेर को हर लें और दीनों की सदा रक्षा करें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।